फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई:

- बुआई के 150–180 दिनों के बाद फसल तैयार हो जाती है।
- पत्तियों के सूखने और पीली लाल बेरियों से फसल तैयार होने का अनुमान लगाया जाता है।
- जड़ों के लिए पूरे पौधे को उखाड़ा जाता है, और जड़ों को 1–2 सेमी ऊपर तने से काटकर अन्य भागों से अलग किया जाता है।
- जड़ों को छोटे टुकड़ों (7–10 सेमी) में सीधा काटा जाता है या जड़ों को पूरा ही सुखाया जाता है।
- बेरियों को सुखाया जाता है और बीज प्राप्त करने के लिए मंडाई की जाती है।

फसल पश्चात प्रबंधन:

- सुखाई गई जड़ों को धोया और साफ किया जाता है।
- पार्श्व जड़ों की छंटाई और ग्रेडिंग की जाती है।
- **ग्रेडिंग:** फिर पूरे उत्पाद को मोटाई, एकरूपता, शुद्धता, और अंदर की सफेदी के आधार पर चार ग्रेडों में छांटा जाता है।
- **ए ग्रेड:** 7 सेमी लंबी, ठोस, 1.0–1.5 सेमी व्यास वाली जड़
- **बी ग्रेड:** 5 सेमी लंबी, ठोस, 1 सेमी से कम व्यास वाली जड़
- **सी ग्रेड:** 3–4 सेमी लंबी, किनारे की शाखाएं ठोस, 1 सेमी या कम व्यास की जड़
- **निम्नतर ग्रेड:** छोटे टुकड़े, अर्ध–ठोस, बहुत पतली या बहुत मोटी, कटी हुई या अंदर से पीलेपन वाली जड़

उपज और खेती की लागत: लगभग 0.5–0.7 टन सूखी जड़ें और 30–40 किलो बीज / एक हेक्टेयर में खेती की लागत रु. 32,876 / – है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वैबसाईट : www.nmpb.nic.in

नोट – कृषि प्राद्योगिकी का विकास (क) कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरू, कर्नाटक तथा (ख) केंद्रीय औषधीय एवं सुगंधित पादप संस्थान (सीआईएमएपी), लखनऊ, उत्तर प्रदेश द्वारा किया गया है।

अश्वगंधा की खेती

सामान्य नाम	:	अश्वगंधा
वानस्पतिक नाम	:	विथानिया सोमनिफेरा
कुल	:	सोलेनीऐसी
उपयोगी भाग	:	जड़, पत्तियां और बीज
सामान्य प्रयोग	:	यह औषधि मुख्य रूप से आयुर्वेदिक और यूनानी नुस्खों में प्रयोग की जाती है। इस पौधे में ट्यूमर रोधी, ज्वलन रोधी, बैक्टीरिया रोधी, कवकनाशी, कृमिनाशक, तनाव रोधी, शक्तिवर्धक और ज्वरनाशक गुण हैं। इसे अनिद्रा, कमजोरी, अल्सर और ल्यूकोडर्मा में भी प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा ओर होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

अश्वगंधा

विथानिया सोमनिफेरा
कुल : सोलेनीयेसी

यह प्रायः है, 1.5 मीटर तक होती है इसकी पत्तियां साधारण, अंडाकार, 10 सेमी लंबी होती हैं। जड़ें मोटी, लंबी, मांसल और सफेद–भूरे रंग की होती हैं।

जलवायु और मिट्टीः

- अश्वगंधा कम उपजाऊ भूमि में उगाई जाती है।
- यह अच्छी तरह से सूखी मिट्टी में पीएच 6.5 से 8.0 के साथ लाल, रेतीली, काली और बलुई मिट्टी में अच्छी तरह से बढ़ती है।
- इस फसल को बढ़ते समय शुष्क मौसम की जरूरत होती है।

उगाने की सामग्रीः बीज

कृषि तकनीक

खेत की तैयारी और बुआईः

- खेत को अच्छी तरह से तैयार किया जाता है, सुविधाजनक आकार के प्लॉटों में बांटा जाता है।
- जुलाई के दूसरे सप्ताह से अगस्त तक 10–12 किलो/हेक्टेयर की दर से छिड़काव कर बीजों की बुआई की जाती है।

नर्सरी विधि

बीज बोने की दर और पूर्व उपचारः

- एक हेक्टेयर के लिए लगभग 5 किलो बीजों की जरूरत होती है।
- बुआई से पहले प्रति किलो 3 ग्राम की दर से थेरम–45 से बीजों का उपचार किया जाता है।
- बुआई के बाद हल्की बारिश से अंकुरण अच्छा होता है।

पौध उगानाः

- पौधे से पौधे और कतार से कतार की दूरी भूमि की उर्वरता और किस्म के अनुसार समायोजित की जा सकती है।
- कम उपजाऊ भूमि में रोपण सघन और अधिक उपजाऊ भूमि में अधिक दूरी पर किया जा सकता है।
- जून–जुलाई के दौरान नर्सरी क्यारियों में 5 सेमी की दूरी पर 1–3 सेमी गहराई में कतारों में बीज बोये जाते हैं।
- बुआई के 6–7 दिनों के अंदर अंकुरण आरंभ हो जाता है।
- पौधों को जुलाई–अगस्त में अच्छी तरह तैयार भूमि में 60X60 सेमी की दूरी पर रोपा जा सकता है।

खेत में रोपाई

भूमि की तैयारी और खाद डालनाः

- भूमि को अच्छी तरह भुरभुरा और समतल करें।
- 200–300 किलो उर्वरक मिट्टी में मिलाया जा सकता है, या उसके स्थान पर 5–6 बार वर्मी–कंपोस्ट भी प्रयोग किया जा सकता है।
- पौध की आयु 25–30 दिन होती है।
- पौधों का प्रत्यारोपण वर्षा ऋतु के आखिरी दिनों में किया जाता है।

पौध की दूरी प्राय :

- 10 से 15 सेंमी. होनी चाहिए।

अंतर फसल प्रणालीः

- कोकोस नुसिफेरा (नारियल), मैग्निफेरा इंडिका (आम), टेक्टोना ग्रैंडिस (टीक), सिमारुबा ऑफिसिनेलिस (सिमारुबा), जटरोफा करकास (जटरोफा), और पॉपुलस केनेडेन्सिस (पॉपुलस) के साथ भी विथानिया की फसल लगाई जा सकती है।

सिंचाईः

- यह एक वर्षा पोषित फसल है अतः प्रत्यारोपण के बाद हल्की बौछार इसे स्थापित होने में मदद करती है।

कीट और बीमारियांः

- चित्ती को कम करने के लिए थिरम या कैप्टोन (2–4 ग्राम/किलो) से बीजों का उपचार करें।
- रोगग्रस्त पौधों को यांत्रिक विधि से हटाना बेहतर होता है।